विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

बारिश में औषधीय पौधे लगाएं

मानसून के आते ही लोगों के समक्ष यह दुविधा बन जाती है की इस मानसून में कौन से पौधे लगाएं जो मानव जीवन के लिए हितकारी हो। यह हमारा कर्तव्य और दायित्व है कि हम इस मानसून में अपने घरों में औषधीय पौधे न केवल लगाएं अपितु उनका संरक्षण भी करें। औषधीय गुणों से भरपूर पौधे आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। अगर आप इन पौधों का उपयोग अपनी अच्छी सेहत के लिए करना चाहते हैं।

देशभर में मानसून की बारिश होने से लोगों को जहां भीषण गर्मी से निजात मिली है वहीं पेयजल की समस्या दूर होने की सम्भावना भी व्यक्त की जा रही है। मानसून अपने साथ अपार खुशियां लेकर आता है। लोगों को पीने के लिए जहाँ पानी मिलता है वहां किसान अपने खेतों में बुवाई शुरू कर देते है। इसी के साथ देशभर में पौधरोपण का कार्य भी शुरू हो जाता है। मानसून में अपने घरों में औषधीय पौधे न केवल लगाएं अपितु उनका संरक्षण भी करें। हमारे दादा–दादी और नाना–नानी इन औषधीय पौधों से घरेलु उपचार के लिए उपयोग करते आए हैं। औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े–बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े–बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे तैसे अपने जीवन की गाड़ी को हांकते है। पेड़–पौधे हमारे शरीर में होने वाली बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही मनुष्य ने तरह–तरह के पेड़–पौधों का उपयोग किया है अपने–आप को बीमारियों से सुरक्षित रखने के लिए।

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही इस विज्ञान ने भी तरक्की किया। यही कारण है कि प्राचीन जितनी भी विकसित सभ्यताएँ थी उन सभी में औषधीय पौधों के उपयोग की सबल परम्परा थी, चाहे मिस्त्र हो, यूनान हो, बेबीलोन की सभ्यता हो, चीन हो या सिन्धु घाटी की सभ्यता हो। सभी के साथ कुछ ऐसा अवश्य था कि उन्होंने अपनी अलग परम्परा विकसित कर ली थी। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से निपटने के लिए उन परम्पराओं में औषधीय पौधों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। औषधीय पौधे ऐसे पौधे हैं जिनका पारंपरिक रूप से विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों के इलाज के लिए उनके चिकित्सीय गुणों के लिए उपयोग किया जाता रहा है।

इन पौधों में जैविक रूप से सक्रिय यौगिक होते हैं, जैसे अल्कलॉइड्स, फ्लेवोनोइड्स, टेरपेनोइड्स और फेनोलिक एसिड, जो औषधीय गुणों से युक्त पाए गए हैं। भारत में चार ऐसी औषधीय प्रणालियों का चलन है जिनमें औषधीय पौधों का उपयोग आवश्यक है। यह पद्धितयाँ हैं– आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा तथा तिब्बतन। भारत सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण (ऑल इण्डिया को–ऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एथ्नो–बायोलॉजी) से यह तथ्य सामने निकलकर आया था कि लगभग 8000 पेड़–पौधे हैं भारत में जिनका उपयोग औषधीय गुणों के लिए होता है। आयुर्वेद में लगभग 1800, सिद्धा में लगभग 1100, यूनानी में लगभग 750, तिब्बती विधि में 300 के लगभग तथा लोक परम्परा में लगभग 4700 प्रकार के पेड़–पौधों के उपयोग की परम्परा वैज्ञानिक परम्परा पर आधारित रही है। आयुर्वेद, सिद्धा, तिब्बती तथा यूनानी से सम्बन्धित पुस्तकों में लगभग 2000 प्रकार के पेड़–पौधों के गुणों का विस्तार से विवरण है। 50000 से अधिक ऐसे नुस्खों का प्रचलन भारत में है जिनका उपयोग तरह–तरह की बीमारियों के इलाज के लिए होता है।

हमारे दादा-दादी और नाना-नानी इन औषधीय पौधों से घरेलु उपचार के लिए उपयोग करते आए हैं। औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े-बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े-बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते।

यह सर्व विदित है कोरोना जैसी महामारी का कहर बीमारों पर अधिक प्रहार करता है। ऐसे में औषधीय पौधें इम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे–तैसे अपने जीवन की गाड़ी को हांकते है। यदि हम कोरोना जैसे संक्रमण का मुकाबला करने के लिए अपने घरों पर औषधीय पौधे लगाएं तो ये हमें प्राण वायु तो देते ही है साथ ही स्वस्थ जीवन की राह भी दिखाएंगे। पेड़–पौधे हमारे शरीर में होने वाली विभिन्न बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं।

प्राचीन काल में मानव ने तरह–तरह के पेड़–पौधों की खोज कर खुद को निरोगी रखा। मानव सभ्यता के विकास के साथ विज्ञान ने हमें नयी नयी ऊंचाइयों तक पहुँचाया, इसमें कोई दो राय नहीं है मगर औषधीय पौधों की महत्ता कभी कम नहीं हुई। भारत में औषधीय गुण वाले असंख्य पेड़–पौधे हैं। भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रमाणिक ग्रेंथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। रामायण में संजीवनी बूटी की चर्चा आज भी घर घर में सुनी जा सकती है। बहुत सारी अंग्रेजी दवाइयों में आज भी औषधीय पौधों का मिश्रण किया जाता है। सर्दी, जुकाम, बुखार, बीपी, शुगर, उलटी दस्त जैसी सामान्य बीमारियों से लेकर कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का इलाज भी हमारे औषधीय पौधों में है। यदि इन पेड़ पौधों का हम उचित रखरखाव कर विभिन्न रोगों के इलाज में सही ढंग से उपयोग करें तो ये हमारे स्वस्थ जीवन के लिए बेहद लाभदायक हो सकते है।

औषधीय एवं सुरभित पौधे हमारी धरोहर हैं जिनका वैश्विक महत्व है। विश्व में असंख्य औषधीय एवं सुरभित पौधों की प्रजातियाँ हैं। उनमें से अनेक पौधों का उपयोग हम विभिन्न कारणों से करते हैं और अनेक हमसे अपरिचित हैं। भारत के रेड डाटा बुक में 427 संकटग्रस्त पौधों के नाम दर्ज हैं, इनमें से 28 लुप्त, 124 संकटग्रस्त, 81 नाजुक दशा में, 100 दुर्लभ तथा अन्य पौधे हैं। पारम्परिक औषधि का कोई विपरीत प्रभाव न होने के कारण तथा स्वस्थ जीवन शैली के लिए वर्तमान समय में भी इनका महत्व काफी अधिक बढ़ गया है।

अभी भी विकसित देशों में 80 प्रतिशत जनंसख्या पारम्परिक औषधीय ज्ञान पर ही निर्भर करती हैं। भारत के पहाड़ी और जंगली इलाकों में उपलब्ध तीन सौ से अधिक औषधीय वनस्पतियों की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है। अगर सरकार इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी। सरकार यदि इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी।

हमारे विभिन्न ग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों में हजारों ऐसे नुक्खे बताये गए है जो औषधीय पौधों से निकले है। हमारे देश में आज भी लाखों लोग इन नुस्खों का उपयोग करते है। नीम, तुलसी, बेंग साग, ब्राम्ही, हल्दी, चन्दन, चिरायता, अडूसारू, सदाबहार, गुलाब, सहिजन, हडजोरा, करीपत्ता, लहसून, एलोवीरा लेवेंडर, जीरा, पुदीना, गिलोय, सूरजमुखी,पीपल, आक, बरगद, आंवला, गूगल, अदरख नीम्बू, पत्थरचूर, शतावर, अजवायन, चुकंदर, चिरचिटी, कुल्थी, घृतकुमारी, करेला, पिपली, मेथी, पुनर्नवा, मदन मस्त, पिपली, चंपा, रजनीगंधा, श्वेत अपराजिता, सर्पगन्धा, अशोक और वलाक आदि औषधीय पौधों में से बहुत से ऐसे भी है जो घरों में लगाए जा सकते है। इनमें बहुत सी प्रजातियां अब लुप्तप्राय है। आवश्यकता इस बात की है इन बहु गुणकारी औषधीय पौधों के विकास की योजनाएं बनाकर आम आदमी को इनके प्रयोग और उपयोग की जानकारी दी जाएं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार : एक विश्लेषण

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि आप गूगल करें तो पाएंगे कि आत्ममुग्धता पर लोग कई तरह के सवाल पूछते रहते हैं। ये सवाल कुछ इस तरह के होते हैं: आत्ममुग्ध लोग कैसे होते हैं? उन्हे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? उनको किस तरह से ठगा जा सकता है, डराया जा सकता है या उनसे कब भयभीत होना चाहिए? इस प्रकार से हम देखते हैं कि एक आत्ममुग्ध (नार्सिसिस्ट) व्यक्ति को लोग सामान्य मानव व्यवहार से बाहर मानते हैं और उस पर व्यंग्य करते हैं या फिर उससे दूर रहते हैं। जो लोग उसके नजदीक रहते हैं वे चाटुकारिता के माध्यम से उसका फायदा उठाना चाहते हैं। परंतु कितने ही ऐसे लोग जिनमें आत्मविश्वास होता है उन्हें भी लोग आत्ममुग्ध की श्रेणी में डाल देते हैं। यहां ध्यान देने की बात है कि आत्ममुग्धता एक मनोवैज्ञानिक निदान है जो किसी अनुभवी विशेषज्ञ द्वारा ही स्थापित किया जाना चाहिए। यह एक व्यक्तित्व विकार है जो पूर्ण विश्लेषण द्वारा ही जाना जाता है इसलिए मनचाहे ही किसी व्यक्ति को इस श्रेणी में नहीं डालना चाहिए।

आत्ममुग्धता एक स्वकेंद्रित अहंकार की स्थिति है जो अधिकतर एक मनोविकार होता है परंतु किसी–किसी में यह मनोरोग का रूप भी ले लेता है। इस विकार में व्यक्ति का सोचना अव्यावहारिक एवम आत्म केंद्रित होता है तथा अन्य लोगों के लिए हानिकारक हो सकता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति अपने आसपास और आधीन लोगों के विकास में बाधक बन जाता है या फिर उनके व्यक्ति को नष्ट तक कर देता है। आत्ममुग्धता एक जटिल निदान है जो अधिकतर मामलों में युवावस्था के प्रारंभिक काल में दृष्टिगत होने लगता है। स्वयं को लेकर भव्यता का अहसास, मानो बीते समय के एक सम्राट हैं और जो कुछ हासिल हुआ है वह उसका अधिकार है। विनम्रता के दिखावे के पीछे अपनी सर्वोत्तमता का प्रदर्शन इस विकार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

विकार ग्रसित व्यक्ति को आत्मप्रशंसा की तलाश रहती है और वह खुद को खुद के नाम से संबोधित करने लगता है। उसमें सत्ता, संपन्नता आदि को लेकर पात्रता का भाव जागृत रहता है जिसके फलस्वरूप वह लोगों का शोषण करने में हिचकता नहीं है। उसके व्यवहार में समानुभूति की जगह उद्दण्डता दिखने लगती है। आत्ममुग्ध व्यक्ति बड़ा ईर्ष्यालु होता है और वह स्वयं के प्रतिभाशाली साथियों और सहयोगियों को भी सहन नहीं करता है, उन्हे परदे के पीछे धकेल देता है। अधिकतर मामलों में वह दर्शाता है कि कितनी निम्न श्रेणी से वह किस विशिष्ट मुकाम तक अपनी प्रतिभा से पहुंचा है। वास्तविकता में देखा जाए तो कोई व्यक्ति यदि किसी बड़े या विशिष्ट मुकाम तक पहुंचता हैं तो उसमें कई लोगों का सहयोग होता है।

ज्ञानी हर सहयोग पर विनम्र होता है जबकि आत्ममुग्ध सब कुछ को नकार–सा देता है। समय के साथ बड़प्पन का यह अहसास व्यक्ति और उसके संस्थान दोनों के लिए नुकसानदेह होता है। बड़बोला व्यक्ति अपने घर परिवार में भी बिखराव को जन्म दे सकता है क्योंकि अपने अहंकारी स्वभाव के कारण वह अन्य सदस्यों के मार्ग को अवरूद्ध करने लगता है।

यहां जो बात विशेष रूप से देखी जानी चाहिए वह कुछ इस प्रकार है। इस लेख को पढ़ने के दौरान या फिर सामान्य जीवन में हम लोग अक्सर दूसरे लोगों में आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार ढूंढने लगते हैं। यह कोई बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार नहीं है। सर्वप्रथम हमें अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करना चाहिए कि हमारे स्वयं के अंदर तो इस मनोविकार वाला दानव छुपा नहीं बैठा है। दूसरा अपनी जाने, हम में सबसे बड़ी प्राथमिकता अपने जीवन को विकसित करने की होनी चाहिए। आत्म विश्लेषण द्वारा हम हमारे व्यक्तित्व की खामियां तलाश सकते हैं। यह विश्लेषण यदि जीवनपर्यंत चलता रहे तो विश्वास कीजिए यात्रा आनंददायक बनी रहेगी। यदि स्वयं निदान न कर पाएं तो साल में एक दो बार किसी अनुभवी मनो सलाहकार से बातचीत करना एक उपयोगी निर्णय हो सकता है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

जलभराव से परेशान व्यापारियों ने हिण्डौन में बाजार बंद रखे

कई बाजारों में बरसात से हो रहे जलभराव के विरोध में व्यापारियों ने प्रदर्शन किया

हिण्डौन सिटी, (निसं)। हिण्डौन में बारिश के पानी से कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली में हो रहे जलभराव के विरोध में बुधवार को व्यापारियों ने बाजारों को बंद रखकर प्रदर्शन किया। बाजार में पहुंचे उपखंड अधिकारी के साथ अग्रवाल धर्मशाला में व्यापारियों ने बैठक की और समस्या समाधान की मांग की, जिसके बाद पानी निकासी के लिए नगर परिषद द्वारा नालियों की सफाई का कार्य और तेज कर दिया।

बाजार के व्यापारियों ने बताया कि हिण्डौन के गंदे नाले और छोटी नालियों की सफाई नहीं होने के कारण कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली मार्केट में मामूली बारिश में ही जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पिछले चार दिन हुई तेज बारिश से बाजार में कई–कई फीट पानी भर गया जिसने एक और जहां ग्राहकों को एवं स्थानीय लोगों को आने–जाने में परेशानी का सामना करना पड़ा वहीं दूसरी ओर बाजार में स्थित दुकानों में पानी भरने से व्यापारियों का लाखों रुपए का नुकसान हो गया। बारिश बंद होने के तीसरे दिन भी बाजार की सड़क पर पानी भरा है। जलभराव से परेशान होकर व्यापारियों ने बाजार बंद का आव्हान किया जिसके चलते बुधवार को कटरा बाजार, सराफा बाजार, कंबलवाल गली मार्केट, डेंप रोड के बाजार बंद रहे। दोपहर में एसडीएम हेमराज गुर्जर और नगर परिषद के अधिकारी बाजार पहुंचे और अग्रवाल धर्मशाला में व्यापारियों के साथ बैठक कर जल निकासी के उपायों पर चर्चा की। एसडीएम ने सुझाव दिया कि बाजार में बार–बार जलभराव नहीं हो इसके स्थाई समाधान हेतु प्रयास होने चाहिए। इसके लिए व्यापारियों की एक कमेटी बनाई जाए जो इस समस्या के स्थाई समाधान के लिए सुझाव दे। इसके बाद कार्य हेतु विभाग के तकनीकी विशेषज्ञों से प्रस्ताव बनाकर राज्य सरकार भेजा जाएगा। इस दौरान कई व्यापारियों ने जल निकासी के लिए नाले के पक्के पटाव को तोड़कर सफाई कराने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि इस समस्या के समाधान के लिए मुख्यमंत्री से भी मिल जाएगा। नगर परिषद और प्रशासन यदि कार्य करे तो व्यापारी हर संभव सहयोग के लिए तैयार हैं। वहीं कई लोगों ने सुझाव दिया कि मोहन नगर और स्टेशन रोड की नालियों के पानी को बयाना रोड की नालियों से जोड़कर खरेटा रोड पर सीधे खारी ने निकाला जाए। जिससे उधर का पानी बाजार में नहीं भरेगा। वहीं करौली रोड पर थाने के आसपास की कॉलोनियों से आने वाले पानी को भी दूसरी ओर मोड़ा जाए जिससे बाजार के नाले में अधिक पानी की आवक नहीं हो।

एसडीएम हेमराज गुर्जर और नगर परिषद के अधिकारियों ने व्यापारियों के साथ बैठक कर जल निकासी के उपायों पर चर्चा की।

- **उपखंड अधिकारी के साथ व्यापारियों ने बैठक कर समस्या के समाधान की मांग की**
- **पानी निकासी के लिए नगर परिषद द्वारा नालियों की सफाई का कार्य और तेज कर दिया**

व्यापारियों ने कहा कि जलभराव की समस्या के लिए काफी समय से व्यापारी नगर परिषद, प्रशासनिक अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से मिल चुके हैं लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं हो सका है। ज्ञात रहे कि हाईकोर्ट के निर्देश के बाद वसुंधरा राजे सरकार ने 17 करोड़ रुपए की राशि नाले के पटाव और उसके ऊपर ढकाव के लिए स्वीकृत की। लेकिन संवेदक द्वारा वाटर लेवल किए बिना ही नाले का पटाव और ढकाव कर दिया जिसके बाद से नाले में कचरा एकत्रित होने लगा। नाले के ऊपर आरसीसी की छत का ढकाव कर देने से अंदर भर कचरा साफ नहीं हो पा रहा है, जिससे जरा सी बारिश में बाजारों में कई फीट पानी जमा हो जाता है। गत दिनों हिण्डौन विधायक अनीता जाटव ने भी जिला कलेक्टर से मिलकर और उपजिला कलेक्टर को इस समस्या से अवगत कराकर ज्ञापन दिया था।

मोहर्रम मिनी उर्स पर ख्वाजा की दरगाह में जायरीन की आवक बढ़ी

अजमेर, (कासं)। मोहर्रम यानी मिनी उर्स पर सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत के लिए आने वाले जायरीन की आवक से दरगाह सहित परिधि क्षेत्र में खासी रौनक बनी हुई है। देशभर के राज्यों से जायरीन के आने का सिलसिला लगातार जारी है। दरगाह सहित विश्राम स्थली पर यह रौनक मोहर्रम तक बनी रहेगी। दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला गुरुवार अलसुबह चार बजे 72 घंटे के लिए आम जायरीन के लिए खोला जाएगा। मालूम हो कि बाबा फरीद के पाकिस्तान स्थित पाक पट्टन में सालाना उर्स के अवसर पर जो जायरीन पाक नहीं जा सकते वे चिल्ले की जियारत करने के लिए अजमेर आते हैं।

- **दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला गुरुवार अलसुबह चार बजे 72 घंटे के लिए आम जायरीन के लिए खोला जाएगा**

कायड़ विश्राम स्थली पर जायरीन के बुधवार को 200 से ज्यादा वाहन खड़े नजर आए। जायरीन की आवक के चलते ही विश्राम स्थली पर अस्थाई दुकान लगाने वालों के कारोबारियों के चेहरे पर खिल उठे हैं। विश्राम स्थली से दरगाह तक आने व जाने के लिए आटो रिक्शा व ई–रिक्शा चालकों के कारोबार में बढ़ोत्तरी हुई है। महाना छठी के बाद जायरीन की रवानगी शुरू हो जाएगी। जायरीन की आवक होने से कायड़ विश्राम स्थली में दरगाह कमेटी और जिला प्रशासन की ओर से तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है, जिससे वहां आने वाले जायरीन को परेशानी नहीं हो।

सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह परिसर स्थित बाबा फरीद का चिल्ला साल में सिर्फ एक बार ही मोहर्रम के वक्त सिर्फ 72 घंटे के लिए खोला जाता है, जिसकी जियारत के लिए देश–विदेश से बड़ी संख्या में जायरीन यहां पहुंचते हैं। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोग के अलावा सभी समाजों के लोग बाबा फरीद की जियारत करने के लिए पहुंचते हैं। उल्लेखनीय है कि बाबा फरीद की मजार पाकिस्तान स्थित पाक–पटन में मौजूद है, जहां मोहर्रम की 5 तारीख को उर्स बनाया जाता है। उनके उर्स के मौके पर ही 11 जुलाई को अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह स्थित बाबा फरीद का चिल्ला आम जायरीन की जियारत के लिए खोल दिया जाता है। बाबा फरीद गंज शकर के नाम से भी जाने जाते हैं, जहां उन्होंने ख्वाजा साहब की दरगाह में 40 दिन इस स्थान पर इबादत की थी, उसी जगह को बाबा फरीद का चिल्ला है। चिल्ला की जियारत करने वालों के लिए जायरीन की लाइन लगाने का काम दरगाह परिसर की अकबरी मस्जिद से महफिल खाना होकर शाहजहानी मस्जिद के सामने सोलाखंबा गेट के करीब से लगेगी। इस दौरान कुछ खादिमों का समुदाय जायरीन को पीने का पानी उपलब्ध कराएगा।

खादिमों की संस्था अंजुमान यादगार के उपाध्यक्ष एवं मोहर्रम कनवीनर अब्दुल कलाम चिश्ती ने बताया कि मोहर्रम मिनी उर्स के अवसर पर ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत के लिए आने वाले आम जायरीन के लिए दरगाह परिसर में प्रतिदिन नि:शुल्क लंगर और शरबत उपलब्ध कराया जा रहा है।

दरगाह क्षेत्र में हर कोई हजरत इमाम हुसैन की याद में चिश्तिया रंग में डूबा हुआ नजर आने लगा है। क्षेत्र में ढोल ताशों की गूंज के बीच मर्सियाख्यानी और शहादत का दौर शुरू हो चुका है जहां चारों तरफ हजरत इमाम हुसैन की याद में हुए हरे कपड़े पहने अकीदतमंद नजर आने लगे हैं। मोहर्रम की 9 व 10 तारीख को दरगाह क्षेत्र स्थित अंदरकोट में तलवारों से हाईदौस खेलने की परम्परा है। इसके लिए दी पंचायत अंदरकोटियान को जिला प्रशासन से इजाजत लेनी पड़ती है।

कलेक्टर ने मनरेगा कार्यों का निरीक्षण किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला कलेक्टर नमित मेहता ने बुधवार को पंचायत समिति सुवाणा की ग्राम पंचायत देवली में महात्मा गांधी नरेगा के तहत धर्म नाडी में चल रहे कार्यों का आकस्मिक निरीक्षण किया। जिला कलेक्टर ने वहां मेट से श्रमिकों के भुगतान के बारे में जानकारी ली। कार्यस्थल पर पेयजल एवं फर्स्टएड किट के बारे में पूछा। साथ ही मस्टरोल, श्रमिकों की हाजिरी तथा उनके अनुरूप उपस्थिति की भी जांच की एवं आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गये।

जिला कलेक्टर ने मेट से मजदूरों के टास्क संबंधी जानकारी लिए जाने पर संतोषप्रद जानकारी नहीं देने तथा कार्य में लापरवाही बरतने पर कार्यरत मेट को ब्लैक लिस्ट करने एवं कार्य के पर्यवेक्षण में लापरवाही बरतने पर कनिष्ठ अभियन्ता को हटाकर मुख्यालय जिला परिषद करने के निर्देश अधिशाषी अभियन्ता मनरेगा हरकेश सिंह को दिए।

इसके पश्चात जिला कलेक्टर ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली का भी निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यालय की विभिन्न व्यवस्थाओं, मिड–डे मील व्यवस्था, दुग्ध वितरण व्यवस्था आदि के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गए। संस्था प्रधान व छात्राओं से मिड–डे मिल की गुणवत्ता के बारे में जानकारी ली। छात्राओं ने बताया कि मिड–डे मील के लिए पुराने विद्यालय परिसर में एक किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। इस पर जिला कलेक्टर ने तुरंत नवीन परिसर में ही एमडीएम के लिए व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

- **जिला कलेक्टर ने समयबद्ध कार्य तथा प्रभावी मॉनिटरिंग करने के दिए निर्देश**
- **कलेक्टर ने स्कूल में विद्यार्थियों के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया**

जिला कलेक्टर ने स्कूल में विद्यार्थियों के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया। सघन वृक्षारोपण अभियान के तहत विद्यालय परिसर में एक साथ 350 पौधे लगाए गए। जिला कलेक्टर ने विद्यार्थियों को पौधों पर अपना नाम लिखकर प्रत्येक पौधे की नियमित सार–संभाल के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान प्रधानाचार्य संतोष कुमार जीनगर, पूर्व सरपंच अशोक चौधरी, जिला परिषद के एक्सईएन गोपाल लाल टेलर, ग्राम विकास अधिकारी भैरूलाल धोबी तथा विद्यालय के स्टाफ ने भाग लिया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 11 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 1:04 तक, वारियान योग रात्रि 4:09 तक, बालव करण दिन 10:04 तक, चन्द्रमा आज सांय 7 49 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–मेष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 1:04 से आरम्भ होगा। आज स्कन्ध पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:26 तक, चर 10:50 से 12:32 तक, लाभ–अमृत 12:32 से 3:56 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

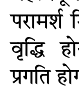

मेष

परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

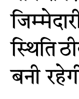

वृष

पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

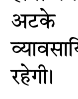

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

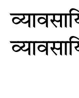

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

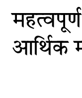

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

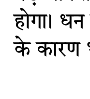

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि का भय है। घर/परिवार के कारण भागदौड़ रहेगी।

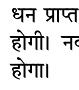

तुला

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा।

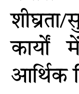

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

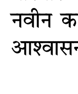

धनु

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में शुभ के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

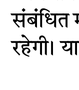

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

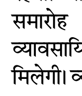

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

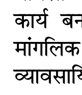

मीन

अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।